''वाचनाचार्य सुधाकलश कृत संगीतोपनिषत्सारोद्धार ग्रन्थ का वैशिष्ट्य एवं उसकी प्रासंगिकता"

दयालबाग एजूकेशनल इन्स्टीट्यूट (डीम्ड यूनिवर्सिटी)
दयालबाग़, आगरा से संगीत में पी–एच.डी
उपाधि की हेतु प्रस्तुत
शोध प्रबन्ध की प्रस्तावित

रूपरेखा

2014

निर्देशिका:
डॉ0 रश्मि श्रीवास्तव
एसिस्टेन्ट प्रोफेसर
संगीत विभाग

शोधार्थिनी
ज्योति गुप्ता

प्रो0 रागिनी रॉय
कला संकाय प्रमुख

प्रो0(श्रीमती) सुभद्रा कुमारी सतसंगी
संगीत –विभागाध्यक्षा

कला संकाय
दयालबाग एजूकेशनल इन्स्टीट्यूट (डीम्ड यूनिवर्सिटी)
दयालबाग आगरा – 282005

''वाचनाचार्य सुधाकलश कृत संगीतोपनिषत्सारोद्धार

ग्रन्थ का वैशिष्ट्य एवं उसका प्रासंगिकता"

संगीत एक समृद्ध एवं वैभवशाली कला है, जो आदि काल से मानव के हृदय में वांछित भाव उत्पन्न करने का सशक्त माध्यम रहा है। संगीत में माधुर्यपूर्ण आकर्षण होता है,जो स्वतः ही मानव चित्त को सुन्दर एवं मनोहर बनाता है।

संगीत पूर्णतःक्रिया प्रधान कला है,जिसका संरक्षण, संवर्धन एवं हस्तान्तरण गुरू–शिष्य परम्परा के द्वारा ही प्राचीन काल से होता रहा है, किन्तु इस कला के सैद्धान्तिक पक्ष को अक्षुण्ण बनाये रखने के लिये हमारे पूर्व आचार्यों, मनीषियों ने इस कला से सम्बन्धित अनेकानेक उच्चकोटि के ग्रन्थों का सृजन किया, जिनके माध्यम से प्राचीन काल से विकसित यह कला वर्तमान काल तक संरक्षित, संवर्धित व अक्षुण्ण रह सकी।

संगीत के क्षेत्र में यद्यपि अनेक उत्कृष्ट कोटि के ग्रन्थों की रचना हुई यथा नाट्यशास्त्र, बृहद्देशी, दत्तिलम्, मानसोल्लास, संगीत मकरन्द, संगीत चूडामणि, संगीत रत्नाकर आदि ग्रन्थ संगीत से सम्बन्धित रहें, किन्तु इन ग्रन्थों के अतिरिक्त एक और महत्त्वपूर्ण ग्रन्थ है– **संगीतोपनिषत्सारोद्धार** जिसका लेखन **वाचनाचार्य सुधा कलश** द्वारा किया गया है। यह ग्रन्थ 14वीं शताब्दी के पूर्वाद्ध का है। सुधाकलश जी एक जैन आचार्य थे। जिन्हें वाचनाचार्य की उपादि प्राप्ति थी। धार्मिक रूप से जैन आचार्य होते हुए भी उन्होंने संगीत के क्षेत्र में महती भूमिका निभाते हुए संगीतोपनिषत्सारोद्धार ग्रन्थ का प्रतिपादन किया ,जो कि तत्कालीन समय में प्रचलित संगीत व आध्यात्मिक चेतना को समाहित किये हुए महत्त्वपूर्ण ग्रन्थ है।

वाचनाचार्य सुधा कलश द्वारा रचित संगीतोपनिषत्सारोद्धार ग्रन्थ की मूल कृति का प्रथम संस्करण उमाकान्त प्रेमानन्द शाह द्वारा ओरिण्एटल इस्टीट्यूट, बडौदा से सन् 1961 में प्रकाशित किया गया ,जो गायकवाड ओरिण्एटल सीरिज नम्बर– 133 में है। उमाकान्त प्रेमानन्द शाह ने अपनी कृति में चार अलग–अलग जगह (H. K.P & O ,manuscripts) से संग्रह किया है। शोधकर्त्री को गहन अध्ययन के पश्चात् ये ज्ञात हुआ कि संगीतोपनिषत्सारोद्धार ग्रन्थ कार्य क्षेत्र में अक्षुता है। केवल इसी संस्करण का ALLYN MINER द्वारा अंग्रजी भाषा में अनुवाद किया, जो इंद्रिरा गांधी नेशनल सेन्टर, नई दिल्ली प्रकाशन से 1998 में प्रकाशित हुआ।

यद्यपि यह ग्रन्थ स्वयं में वैशिष्ट्य पूर्ण ग्रन्थ है तथापि शाधकत्रीं के विचारानुसार इस ग्रन्थ के वैशिष्ट्यों के विषय में कम ही लोग जानकारी रखते है। इस ग्रन्थ के वैशिष्ट्य पर यदि दृष्टिपात करें तो सर्वप्रथम संगीतोपनिषत्सारोद्धार ग्रन्थ का नाम ही अपने आप में वैशिष्ट को प्रदर्शित करता है। इसमें तीन पदों का योग हैः– **संगीत + उपनिषद् + सारोद्धार** चुँकि इस ग्रन्थ को उन्होंने संगीत उपनिषद् के रूप में अभिव्यक्त किया है। इसलिए सर्वप्रथम **उपनिषद्** शब्द के अर्थ पर ही दृष्टिपात करना आवश्यक हैं। उपनिषद् शब्द उप और नि उपसर्ग पूर्वक 'सद्' घातु से क्विप् प्रत्यय लगाकर निष्पन्न होता है। इसका शाब्दिक अर्थ है–समीप में बैठना अर्थात् गुरू के समीप में बैठकर ज्ञान प्राप्त करना ।

जिस प्रकार उपनिषद् जो कि समस्त वेदों का सार है, तथा जो पुनर्जन्म, कर्मफलवाद, आत्मा–परमात्मा, ब्रह्म की प्राप्ति का मार्ग, भारतीय चेतना व दर्शन का मूल माना जाता है। उसी प्रकार संगीतोपनिषत्सारोद्धार ग्रन्थ भी संगीत के गायन , वादन व नृत्य से सम्बन्धित समस्त बिन्दुओं को अपने में समाहित किये हुए है, तथा जिसमें नादानुसंधान, नादोत्पत्ति ,अलौकिक वाद्य धुनो ,दर्शन व संगीत के माध्यम से आध्यात्मिक चेतना आदि का रहस्योद्घाटन करता है।

आचार्य शंकर ने उपनिषद् को ब्रह्मविद्या कहा है। इसके अध्ययन – परिशीलन से हमें तथ्यों का बोध होता है। इस ग्रन्थ से संगीत के तत्त्वों का बोध होता है। उपनिषद् शब्द का प्रयोग, मुक्ति या मोक्ष का प्रतीक है। उसी प्रकार संगीतोपनिषत्सारोद्धार ग्रन्थ नाद चेतना एवं अनाहत चेतना का प्रतीक है। उपनिषद् का सार या रहस्य गुरू के बिना असम्भव है। संगीत आत्मा की आवाज है, यह तो सर्वविदित ही है। उस आत्मा की आवाज यानि अनाहत चेतना के ज्ञान की प्राप्ति गुरू बिना संभव नही है। संगीत एक क्रियात्मक कला है। गुरू मुखी कला है, जिसमें गुरू के समीप बैठकर ही ज्ञानार्जन किया जा सकता है। अस्तु इसी भाव को लेते हुए लेखक ने अपने ग्रन्थ का प्रारम्भ ही गुरू की महत्ता प्रतिपादित करते हुए लिखा है यथाः–

न कूरकंग्रहधराय नदीश्वराय नात्यन्ततापविषमाय दिवाकराय ।।
नोद्यत्कङ्कलुषाय निशाकराय तस्मै नमोऽस्तु गुरवे गुरूवैभवाय।।3।।

प्रथम अध्याय श्लोक संख्या –3

सारोद्धार :– जीवन का परम लक्ष्य हैः– आत्मा का परमात्मा से साक्षात्कार होना, परमात्मा में लीन हो जाना ,परमात्मा की प्राप्ति कर मोक्ष की प्राप्ति होना।
संगीत का आधार भी नाद ही है।नादात्मक ध्वनि ही संगीत का मूल प्राण है और नाद साधना के द्वारा ही मनुष्य परमानन्द प्राप्ति कर मोक्ष पा सकता है। संगीत में परमानन्द की प्राप्ति वह है, जिसमें श्रोता नादात्मक ध्वनियों से तादात्म्य स्थापित कर सके, उसमें लीन हो जाये । वही सच्चा परमानन्द है और यही संगीत का सार भी । अस्तु ! नाद की दृष्टि से भी यह ग्रन्थ अति महत्त्वपूर्ण है।

संगीतोपनिषत्सारोद्धार ग्रन्थ छः अध्याय में विभक्त ग्रन्थ है। जिसका प्रथम अध्याय गीत प्रकाशनाध्याय है, जिसके अर्न्तगत भारतीय परम्परा में मॉ सरस्वती की महिमा वर्णन के साथ ही गुरू की महत्ता व उन्हें नमन करते हुए संगीतात्मक तत्त्वों का निरूपण किया गया हैं, इसी के साथ पूर्ववर्ती आचार्यों को आभार व्यक्त करते हुए उनके मतों को इस ग्रन्थ में समाहित किया गया है। तत्पश्चात् स्तुति गान, मार्गी व देशी संगीत ,स्वर के प्रकार ,पिण्डोत्पत्ति (शरीर की उत्पत्ति), गर्भावस्था से यौवनावस्था तक की शारीरिक संरचना, बालक व बालिका के कण्ठ ध्वनि की विभिन्न अवस्थाओं का उल्लेख किया है। इस ग्रन्थ के लेखक शैव दर्शन से प्रभावित हैं अतः प्रारम्भ में शिव– शक्ति, नाद ,चेतना ,शब्दोत्पत्ति ,गीत में निबद्ध व अनिबद्ध आदि का उल्लेख किया है।

इस ग्रन्थ का द्वितीय अध्याय–प्रस्तारादि सप्ताश्रय ताल प्रकाशनाध्याय है जिसके अन्तर्गत आचार्य सुधा कलश जी ने ताल की स्तुति व महत्त्व के संन्दर्भ में कहा हैं कि ताल विहीन गायन ,वादन तथा नृत्य निरर्थक शोभा हीन लगते है यथाः–

गीतं, वाद्यं तथा नृत्य तालवर्ज न शोभते।

द्वितीय अध्याय श्लोक संख्या –5

तत्पश्चात् ताल के अवयव (द्रुत,प्लुत,लघु,गुरू इत्यादि) ग्रह व लय (सम, अतीत, अनागत)ताल की निष्पत्ति(पाचॅ प्रकार से प्रस्तार, संख्या/मात्रा, नष्ट, उद्दिष्ट व कलित इत्यादि)की विधि तथा 73 तालों का परिचय ,पाटाक्षर व एक मात्रिक ताल से षष्टिमात्रिक ताल का नवीन वर्गीकरण दिया है।

संगीतोपनिषत्सारोद्धार ग्रन्थ का तृतीय अध्याय –गण स्वर रागादि प्रकाशनाध्याय है जिसमें गायन की विधि (तरीका) उसके अवयव , गायन के आधारभूत तत्त्व, गीत के प्रकार ,पद की परिभाषा ,रागात्मक नाद व उसकी जातियॉ एवं स्वर व उनका विकास,सातों स्वरों की उत्पत्ति व लक्षण, ग्राम,मुर्च्छनाएँ, श्रुति, तान आलाप, आदि के पश्चात् राग,रागों की जाति, रागों के लक्षण में श्री राग,बसन्त राग,भैरव राग,भीमपलासी राग,मेघ राग ,पंचम राग ,इत्यादि का परिचय,रागों का वर्गीकरण (चार भागों में रागांग, भाषांग, क्रियांग,व उपांग) अलंकार ,स्वर करण, पाट करण आदि का उद्धाहरण सहित व्याख्या दी है।

इस ग्रन्थ का चौथा अध्याय– चतुर्विध वाद्य प्रकाशनाध्याय हैं इसके अन्तर्गत सर्वप्रथम वाद्यों का वर्गीकरण तीन प्रकार से दिया गया है।पहला संरचना व बनावट के आधार पर, दूसरा जाति के आधार पर ,और तीसरा ध्वनि व प्रहार के आधार पर किया है। फिर चारों प्रकार के वाद्यों(तत्,घन, सुषिर, अवनद्ध) को बजाने की विधि, आहत(प्रहार) द्वारा वाद्य बजाने की तकनीकी विधि ,अँगुली का रखरखाव व प्रहार का स्थान इत्यादि का वर्णन दिया है। इस ग्रन्थ में अवनद्ध वाद्य की उत्पत्ति भगवान शिव द्वारा बताते हुए , अवनद्ध वाद्य पर चर्माच्छान्दित करने की विधि, पाटाक्षर ,व वाद्यो को लय में मिलाने की विधि का विस्तृत विवेचन किया गया है।

इस ग्रन्थ का पंचम अध्याय– नृत्योडोपाड प्रत्यड प्रकाशनाध्याय है, जो कि नृत्य विद्या से सम्बन्धित है। जिसके अन्तर्गत सर्वप्रथम नृत्य आयोजन किन–किन अवसरो होता है उसका वर्णन करते हुए लास्य तथा ताण्डय नृत्य की उत्पत्ति भगवान शिव –शक्ति के द्वारा निर्मित व नृत्य के अंग में उपांग व प्रत्यांग की व्याख्या दी है। जिसमें उपांग के अर्न्तगत् सिर के ऊपर के भागों में आखों के 36 प्रकार के इशारें , पुट(Eyelids) ,भूरूभंगमा(Eyebrous) नाक, होठ, कपोल, ठोडी इत्यादि के बाद प्रत्यांड के अर्न्तगत् ग्रीवा, कण्ठ, स्कन्ध तथा साथ ही हस्त, हस्त करण, हस्त क्रिया का संचालन स्पष्ट किया है। अन्य उपांड में हृदय, पार्श्व, कटि, ऊरू, जद्या, आदि अंगों के लक्षणों का भी निरूपण ग्रन्थकार ने किया है। एवं छठा अध्याय– नृत्य पद्धति से सम्बन्धित है। जिसमें ग्रन्थ कार ने नृत्य को प्रमुख अंग मानते हुए, नृत्य की समस्त पद्धतियों का निरूपण किया है।

- संगीतोपनिषत्सारोद्धार ग्रन्थ संगीत के विभिन्न तत्त्वों की दृष्टि से नवीन चेतना का द्योतक है। क्योंकि इसमें पूर्ववर्ती ग्रन्थ की विशेषता के साथ–साथ कुछ अलग वैशिष्ट्य भी दृष्टव्य होता है।जो निम्नवत् हैः–

1. इस ग्रन्थ में उपनिषद् के भाव को लेकर संगीत के समस्त तत्त्वों का सार दिया गया है।

2. इस ग्रन्थ में शिव–शक्ति को नाद का आधार मानते हुए ,आध्यात्मिक चेतना को सर्वोत्कृष्ट स्थान दिया गया है। जो शैव धर्म से सम्बन्धित है।

3. इस ग्रन्थ में दर्शन परक दृष्टिकोण अपनाते हुए दार्शनिक पक्ष पर अधिक बल दिखाई देता है।

4. इस ग्रन्थ में गीत के प्रकार में प्रबन्ध का कम उल्लेख करते हुए, रूपक, वस्तु का वर्णन किया गया है।

5. इस ग्रन्थ मे वस्तु गान के प्रकारों में सूडा गान ,मण्ठ व प्रतिमण्ठ गान का वर्णन किया गया हैं।

6. यद्यपि इस ग्रन्थ के लेखक वाचनाचार्य जैन आचार्य हैं तथापि उन्होने भरतीय शैव दर्शन परख पक्ष के आधार पर व्याख्या दी है।

7. इस ग्रन्थ मे ताल के अवयवों में देवताओं का बास बताया गया हैं ।जिसके सम्बन्ध में लेखक ने जो विवरण दिया है, वो निम्नवत् है यथाः–

द्रुते स्याद्देवता शम्भुः लघौ शैलात्मजा तथा।
शिवगौर्यो गुरो स्यातां त्रयो ब्रह्मदय प्लुते।।

द्वितीय अध्याय श्लोक संख्या –17–18

अर्थात्– शिव लघु में, गौरा द्रुत में, शिव और गौरा गुरू में ,ब्रह्म ,विष्णु और शिव प्लुत में रहते हैं।

8. पूर्ववत्ती ग्रन्थ संगीत रत्नाकर के तालाध्याय में 120 तालों का वर्णन मिलता हैं। किन्तु इस ग्रन्थ में केवल 73 तालों का वर्णन करते हुए कुछ नवीन तालों का वर्णन भी इस ग्रन्थ में प्राप्त होता है।

9. ताल क्रमांक 25 का आचार्य सुधा कलश जी ने मण्ठकप्रतिमण्ठा नामक एक ही ताल प्रतिपादित किया हैं, जो संगीत रत्नाकर ग्रन्थ में दो प्रथक ताल मानी गयी है।

10. इस ग्रन्थ में आचार्य सुधा कलश जी ने दो स्वरचित तालें पूर्णचन्द्र ताल तथा प्रथ्वीकुण्डलीताल का निरूपण किया हैं; जो 60 मात्रा की है यथाः–

। । । । ऽ ऽ ऽ ऽ । । । । ऽ ऽ ऽ ऽ । । ।
ऽ ऽ ऽ । । । ऽ ऽ ऽ । । ऽ ऽ ।। ऽ ऽ । ऽ। ऽ

11. इस ग्रन्थ में मात्राओं की संख्या के आधार पर तालों को क्रमशः एकमात्रिक से षष्टिमात्रिक (1 से 60 मात्रा वाली तालों) तालों का वर्गीकरण उपलब्ध होता है।

12. इस ग्रन्थ में विभिन्न पाटवर्णों का प्रत्येक ताल में निरूपण किया गया है।जो वर्तमान समय में ठेका अथवा बोल कहलाता है।उद्धाहरण के लिये **आदि ताल** के बोल है।

त द्वि थउ द्रै
। । । ।

13. पूर्ववर्त्ती व समकालीन ग्रन्थों संगीत रत्नाकर ,भरत कोष ,संगीत चूडामणि ,भरतार्णव इत्यादि में इस ग्रन्थ में वर्णित 73 तालों के स्वरूप ,नामकरण, मात्राकाल में विभिन्नता दिखाई पडती है। जैसेः–निस्सारूक ताल का स्वरूप पूर्णताः भिन्न है। व रागवर्द्धनः तालः इन ग्रन्थ में उपलब्ध नहीं होती है।

14. इस ग्रन्थ में देशी तालों के लक्षण के साथ पाट भी दिये गये ।ये पाट अवनद्ध वाद्यों के है, ताल वाद्यों के नहीं, उपरोक्त आदि ताल से स्पष्ट है।

15.आचार्य भरत मुनि द्वारा 66, दत्तिल द्वारा 67, शारंगदेव द्वारा 69 व अहोवल द्वारा 70 मूर्च्छनाओं का उल्लेख मिलता है। जबकि इस ग्रन्थ में 21 मूर्च्छनाओ का उल्लेख मिलता है जो सभंवतया वर्तमान काल में विष्णुनारायण भातखण्डे के द्वारा प्रतिपादित मूर्च्छनाओ का आधार रहा होगा।इस प्रकार यह ग्रन्थ वर्तमान काल से भी सामंजस्य रखता है।

16. वर्तमान काल में प्रचलित उत्तर भारतीय संगीत के भीमपलासी जैसे राग की भी चर्चा इसमें कि गई है यथाः–

भाषाङ्गा विविधा भीमपलासीप्रमुख अपि।

तृतीय अध्याय श्लोक संख्या –23

17. आचार्य सुधा कलश जी ने प्रत्येक स्वर की सात– सात तान बताई है। जिनके ये मूल शब्द है यथाः– **ताना–नाता–नता–नन्ता–तेत्रक–तन्नका।**

विज्ञेयास्ते क्रमात् तानाः सप्त स्वरे–स्वरे।।

तृतीय अध्याय श्लोक संख्या –23

ध्रुवपद –गायको की परम्परा में ये बोल आज भी 'आलाप' का आधार है।

18. आचार्य भरत मुनि ने वाद्यों का वर्गीकरण केवल संरचना के आधार पर दिया है, जबकि इन्होंने प्रयोग व धर्मता के आधार पर भी वाद्यों का वर्गीकरण दिया है।

19. वर्तमान काल में प्रचलित पखावज नामक अवनद्ध वाद्य का सर्वप्रथम उल्लेख सुधा कलश जी द्वारा दिया गया है यथाः–

आउजो लोकभाषायां खंदाउपखाउजौ।

चौथा अध्याय श्लोक संख्या –92

20. वाचनाचार्य सुधा कलश जी मुसलमानों के सम्पर्क में आये थे, जिस कारण वश उन्होंने ढोल, तब्ल इत्यादि म्लेच्छ वाद्य तथा डफा (दफ या ठप) और डॅउडि (डोंडी) जैसे बाजे पैदल चलनेवालों के वाद्य बताये है यथाः–

तथैव म्लेच्छवाद्यानि ढोल तब्लमुखानि तु।
डफा च छामकी चैव डउंडिः पादचारिणाम्।।

चौथा अध्याय श्लोक संख्या –93

21.. वाचनाचार्य सुधा कलश जी ने ध्वनि के आधार पर जो वर्गीकरण दिया ।उसमें पुनः सुषिर वाद्य को वायुऽऽहत नाम से उल्लेख किया है।

22. वाचनाचार्य सुधा कलश जी ने नृत्य को संगीत का प्रमुख अंग मानते हुए गुजरात प्रान्त के देशी नृत्य की व्याख्या की है।

23 इस ग्रन्थ का नृत्याध्याय समस्त अध्यायों से बडा है, तथा नृत्य के दो अध्याय दिये गये है।

'संगीतोपनिषत्सारोद्धार' ग्रन्थ मे उपरोक्त वर्णित वैशिष्ट्यों को दृष्टिगत रखते हुए हम कह सकते है कि यह ग्रन्थ संगीत के क्षेत्र में अति महत्त्वपूर्ण ग्रन्थ है। जिसमें उपनिषद् के भाव लेते हुए तत्कालीन पद्धतियो, विधियॉ , मार्गी व देशी संगीत, पिण्डोत्पत्ति, नाद चेतना, गीतो के प्रकार, मूर्च्छनाए, के साथ ही विभिन्न मात्रिक तालें, उनमें निर्मित बोल

समूह जिन्हें वर्तमान में ठेका कहते है वाद्यों का नवीन दृष्टिकोण, नृत्य के सम्पूर्ण पक्षों का विशद् विवेचन धर्म, दर्शन ,उपनिषद् व आध्यात्मिक चेतना आदि को अपने में समाहित करते हुए यह एक महत्त्वपूर्ण ग्रन्थ है।

- **सम्बन्धित साहित्य का अध्ययनः–** शोधकर्त्री की प्रारम्भ से ही ग्रन्थों के क्षेत्र में रूचि रही है। सर्वेक्षण द्वारा ग्रन्थों के सन्र्दभ में प्राप्त जानकारी अनुसार संगीत के क्षेत्र में प्राचीन काल से लेकर वर्तमान काल तक रचित अनेको ग्रन्थों से सम्बन्धित शोध कार्य हाते रहे है, जिनका वर्णन यहाँ आवश्यक नहीं है केवल मध्य काल के ही ग्रन्थों से संम्बन्धित शोध प्रबन्धों पर दृष्टिपात करें तो निम्नवत् वर्णन मिलता हैः–

डॉ गुलशन सक्सेना, 1993	लक्षण ग्रन्थों के आधार पर देशी ताल पद्धति का विश्लेषणात्मक अध्ययन	खैरागढ शिक्षण संस्थान
by Nisha grover in the year 1996	A critical study of music during 13, 14 and 15 century saltanat period	Delhi University
डॉ विजया पठक ,2004	संगीत रत्नाकर के नृत्य अध्याय का विश्लेषणात्मक अध्ययन	खैरागढ शिक्षण संस्थान
डा रचना थाकुर , 2005	संगीतसमयसार का नृत्य अध्याय का विवेचनात्मक अध्ययन	खैरागढ शिक्षण संस्थान
by Dr. Shraddha malviya in the 2008.	The contribution of mughal emperor in the field of music with special reference to akbar	Kanpur University
डॉ राकेश कुमार अहिरवाल, 2010	राधागोन्विद संगीत सार में वर्णित अवनद्ध एवं घन वाद्यों का विवेचनात्मक अध्ययन	खैरागढ शिक्षण संस्थान
by Chhayarani bahal	Pritishakhya evam shiksha grantho me sangeet	Banaras Hindu University
डॉ मन्जू वर्मा	संगीत राज का अलोचनात्मक अध्ययन	बनारस हिन्दू विश्वविघालय

साहित्य सम्बन्धित पुस्तको का अध्ययन

1–The Sangitopanisat-Saroddharah(A fourteenth-century text on music from western india)composed dy vacancarya Sri Sudhakalasa-Edited &Translated By ALLYN MINERin the year-1998.

2–.आचार्य पार्श्वनाथ कृत संगीत समय सार –आचार्य वृहस्पति ,प्रकाशन –राजकमल प्रकाशन,8 नेता जी सुभाष मार्ग, नई दिल्ली–6

3–.भारतीय तालों का शास्त्रीय विवेचन– डॉ अरूण कुमार सेन, प्रकाशक– मध्यप्रदेश हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, रवीन्द्रनाथ ठाकुर मार्ग ,वानगंगा ,भोपाल, तृतीय संस्करण– 2005

संगीत कला से संम्बन्धित उपरोक्त अनेकानेक ग्रन्थों को दृष्टिपात रखते हुए यह स्पष्ट है कि 'संगीतोपनिषत्सारोद्धार' अतिविशिष्ट पूर्ण ग्रन्थ होते हुए भी इस से सम्बन्धित कोई भी शोधकार्य नहीं किया गया हैं।अस्तु शोधकर्त्री द्वारा शोधकार्य हेतु इस विषय का चयन किया गया। जिससे इस अछूते ग्रन्थ के विषय में अधिक से अधिक लोग परिचित हो सके व इसके वैशिष्ट्य प्रकाश में लाये जा सके। जिसके माध्यम से प्राचीन व मध्यकालीन तालों का प्रचार वर्तमान में प्रदेय हो सकेंगा तथा संगीत विद्यार्थियों ,संगीत प्रेमियों, इतिहास वेत्ताओं व खोज कर्ताओं के लिये नूतन प्रेरणा स्त्रोत बनेगा व उपयोगी सिद्ध होगा। अस्तु समस्त बिन्दुओं को दृष्टव्य रखते हुए शोधकर्त्री ने उक्त विषय का चयन किया है।

- **विषय कथनः–** वाचनाचार्य सुधा कलश कृत "**संगीतोपनिषत्सारोद्धार ग्रन्थ का वैशिष्ट्य एवं उसका प्रासंगिकता"**

- **अध्ययन के उद्देश्यः–** 1. 'संगीतोपनिषत्सारोद्धार' ग्रन्थ में वर्णित गायन से सम्बन्धित विविद् पक्षों के वैशिष्ट्य का अध्ययन।

2.'संगीतोपनिषत्सारोद्धार' ग्रन्थ में वर्णित वाद्य एवं वादन से सम्बन्धित विस्तृत अध्ययन।

3.'संगीतोपनिषत्सारोद्धार' ग्रन्थ में वर्णित ताल एवं पाटाक्षर से सम्बन्धित विवेचात्मक अध्ययन।

4.प्रस्तुत ग्रन्थ में वर्णित आध्यात्मिक एवं दर्शनिक पक्ष का अध्ययन।

5. अन्य प्रसिद्ध एवं प्रतिष्ठित संगीत ग्रन्थो से 'संगीतोपनिषत्सारोद्धार' ग्रन्थ में वर्णित वैशिष्ट्य का तुलनात्मक अध्ययन।

- **परिसीमांकनः–** कार्य व समय सीमा को देखते हुए शोधकर्त्री केवल 'संगीतोपनिषत्सारोद्धार' ग्रन्थ के परिचय व वैशिष्ट्य पर तथा प्राचीन व सम–सामायिक प्रसिद्ध प्रमुख ग्रन्थों से ही तुलनात्मक अध्ययन करेंगी। जिससे शोधकार्य अधिक गहनता से किया जा सके।

- **अध्ययन की विधिः– श**ोधकार्य वर्णनात्मक, विश्लेषणात्मक व सर्वेक्षण विधि द्वारा सम्पन्न किया जायेगा।

- **अध्ययन के स्त्रोतः–** पुस्तकालय, संग्रहालय, शोध प्रपत्र, पत्रिकाएँ, दृश्य–श्रव्य सामग्री, ग्रन्थकारों व विद्वानों से विचार–विमर्श के माध्यम से प्राप्त तथ्यों का संकलन।
- **अध्ययन की रूपरेखा**
  - **प्रथम अध्याय –** 'संगीतोपनिषत्सारोद्धार' ग्रन्थ– एक सामान्य परिचय।
    (क) लेखक परिचय
    (ख) ग्रन्थ–प्रतिपाद्य
  - **द्वितीय अध्याय –** गायन सम्बन्धित अध्ययन।
    (क) गीत–निबद्ध एवं अनिबद्ध
    (ख) राग व रागों का वर्गीकरण
    (ग) स्वर, अलंकार, ग्राम, मूर्च्छना, जाति–परिचय
  - **तृतीय अध्याय –** वाद्य एवं ताल सम्बन्धित अध्ययन।
    (क) वाद्य –वर्गीकरण
    (ख) तालों का परिचय
    (ग) एकमात्रिक से षष्टिमात्रिक तालों का विवेचन
  - **चतुर्थ अध्याय** – नृत्य सम्बन्धित अध्ययन।
    (क) नृत्य का परिचय
    (ख) नृत्य की क्रियाएँ
    (ग) नृत्य के लक्षण
  - **पंचम अध्याय –** ग्रन्थ के आध्यात्मिक एवं दार्शनिक पक्षों का अध्ययन।
  - **छठा अध्याय –** अन्य प्रसिद्ध एवं प्रतिष्ठित संगीत ग्रन्थों से तुलनात्मक अध्ययन।
  - **सप्तम अध्याय –** 'संगीतोपनिषत्सारोद्धार' ग्रन्थ की प्रासंगिकता– एक अध्ययन।
  - **अष्टम अध्याय –** उपसहांर ।

➢ सन्दर्भ ग्रंथ सुची

1. भारतीय संगीतशास्त्र का दर्शन परख अनुशीलन–विमल मुसलगॉकर,प्रकाशक– संगीत रिर्सच अकादमी कलकत्ता, प्रथम संस्करण–1995
2. आचार्य पार्श्वनाथ कृत संगीत समय सार –आचार्य वृहस्पति ,प्रकाशन –राजकमल प्रकाशन,8 नेता जी सुभाष मार्ग, नई दिल्ली–6
3- The Sangitopanisat-Saroddharah(A fourteenth-century text on music from western india)composed dy vacancarya Sri Sudhakalasa-Edited &Translated By ALLYN MINER-Published by Indira Gandhi national centre for the arts central vista janpath, New Delhi,First Published-1998
4. भारतीय संगीत का इतिहास –डॉ ठाकुर जयदेव सिंह,
   प्रकाशक–संगीत रिसर्च एकेडेमी कलकत्ता ,1994
5. भारतीय तालों का शास्त्रीय विवेचन– डॉ अरूण कुमार सेन, प्रकाशक– मध्यप्रदेश हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, रवीन्द्रनाथ ठाकुर मार्ग ,वानगंगा ,भोपाल, तृतीय संस्करण– 2005
6. तबला ग्रन्थ मंजूषा–वेणु वनिता, प्रकाशक–कनिष्क पब्लिशर्स डिस्ट्रीब्यूटर्स, प्रथम संस्करण–2004
7. ताल वाद्य शास्त्र(एक विवेचन)– डॉ. मनोहर भाल चन्द्रराव मराठे– प्रकाशक– शर्मा पुस्तक सदन सन्
8. भारतीय दर्शन–डॉ जगदीशचन्द्र , प्रकाशक–चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन वाराणसी ,प्रथम संस्करण
9. भाषा शब्द कोश – गिरिजादत्त शुक्ल ,गिरीश रामनारायणलाल वेनी प्रसाद इलाहबाद, पंचम संस्करण–1971
10. संस्कृत–हिन्दी अंग्रेजी शब्द कोश–शिवराम आप्टे, अमित प्रकाशन ,अनसारी रोड,दरिया गज, नई दिल्ली